हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ६

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

हँसी की भेंट

तो ऽऽऽऽ, सत्संग पर स्वामी जी की हृदयस्पर्शी वार्ता के पश्चात् गुरुमाई जी ने हम सभी से कहा कि हम अपने अगल-बगल बैठे लोगों की ओर मुड़कर उन्हें गुरुमाई जी की ओर से शुक्रिया अदा करें। गुरुमाई जी ने हमें बताया कि वे आन्तरिकरूप से ऐसा ही करती हैं — वे हम सभी का शुक्रिया अदा करती हैं। गुरुमाई जी ने कहा कि यदि वे इस दिन हॉल में उपस्थित हर व्यक्ति का शुक्रिया अदा करेंगी तो पूरी सुबह इसी में निकल जाएगी — या शायद इससे भी अधिक समय लग जाए! इसलिए, चूँकि हमने जन्मदिन महोत्सव सत्संग की सारिणी बनाने में अपना योगदान दिया था, गुरुमाई जी ने हम सभी को उनकी ओर से शुक्रिया अदा करने की इस अद्‌भुत सेवा में शामिल किया। यह गुरुमाई जी का तरीक़ा था हम सबको एक करने का।

हॉल में प्रतिभागियों से प्रवाहित होती ऊर्जा को महसूस किया जा सकता था और सुना भी जा सकता था। यह। बहुत। सुन्दर। था। यह देखना, यह सुनना और ऐसा करना।

हम बाईं तरफ़ बैठे व्यक्ति की ओर मुड़े। हम दाईं तरफ़ बैठे व्यक्ति की ओर मुड़े। हमने एक-दूसरे को गले लगाया; हम अपने आगे, पीछे और आसपास बैठे लोगों के पास गए और एक-दूसरे को गुरुमाई जी की ओर से धन्यवाद दिया। हमने गर्दन ऊँची कर-करके इधर-उधर देखा कि हम और किसे

धन्यवाद देना चाहते हैं। यह एक असाधारण अनुभव था, यह कल्पना करते हुए सबको धन्यवाद देना जिस तरह गुरुमाई जी देती हैं, पूर्ण हृदय से, स्पष्ट उद्देश्य के साथ, बड़ी दयालुता और सौम्यता के साथ। हम सभी ने यह महसूस किया कि हमें समझा गया है, सराहा गया है। इस अभिनन्दन का हममें से हर एक के लिए क्या महत्त्व था, इसे शब्दों में ढालना कठिन था।

सत्संग के इस प्रसंग को याद करते हुए एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने बताया :

> धन्यवाद देते और लेते समय, मैंने अनुभव किया कि हममें से हरेक के लिए, गुरुमाई जी की करुणा और प्रेम अपार व असीम है, बहुत सशक्त व सर्वव्यापी है। जो सम्पूर्ण संसार तक पहुँचते हैं। एक सदेह गुरु मेरे जीवन में हैं, इसके लिए मुझे बहुत अधिक कृतज्ञता का अनुभव हुआ।

हम इसी रीति से पूरे दिन एक-दूसरे को धन्यवाद देते रह सकते थे! पर फिर, हमने सुना कि स्वामी ईश्वरानन्द हमें वापस अपने स्थान पर आने के लिए आमन्त्रित कर रहे थे।

एक बार जब हम अपने स्थान पर वापस आ गए तो स्वामी जी ने गुरुमाई जी की ओर मुड़कर कहा, "गुरुमाई जी, २०१८ के आपके सन्देश "सत्संग" के लिए धन्यवाद, और हमें यह सिखाने के लिए धन्यवाद कि कैसे, किसी भी क्षण सत्संग का अनुभव किया जा सकता है। जन्मदिन मुबारक़ हो! हम आपसे बहुत प्रेम करते हैं!"

हम सब मौन बैठकर, एक दूसरे के हृदय से जुड़कर सत्संग की उस शक्ति का रसास्वादन कर रहे थे, जिसे हमने, एक-दूसरे को गुरुमाई जी का धन्यवाद अर्पित करते हुए अनुभव किया था।

फिर, स्वामी अखण्डानन्द माइक पर आए और सत्संग के अगले सरस तत्त्व का परिचय दिया : ध्यान।

जैसा कि आपको स्मरण होगा, प्रत्येक वर्ष हम सद्गुण वैभव का अध्ययन करते हैं, जो कि आनन्दमय जन्मदिवस माह के लिए गुरुमाई जी द्वारा दिए गए सद्गुण हैं। और प्रत्येक वर्ष, गुरुमाई जी अपने जन्मदिन के लिए एक विशेष सद्गुण देती हैं।

स्वामी अखण्डानन्द ने इन सद्गुणों पर एक धारणा कराई। उन्होंने कृतज्ञता के सद्गुण पर बात की, और विशेषरूप से कर्मण्यता पर व्याख्यान दिया। गुरुमाई जी ने इस साल, २४ जून २०१८ को अपने जन्मदिन के लिए जो सद्गुण दिया, वह था 'कर्मण्यता'।

स्वामी जी की धारणा का अनुसरण करते हुए, हमने कुछ समय के लिए ध्यान किया। सिद्धयोग ध्यान में हमें गहरी स्थिरता, गहन मौन का अहसास होता है जो कि जाग्रत अवस्था में होने वाली समस्त गतिविधियों का एक अहम हिस्सा है। इसकी अनुभूति हम अपने अस्तित्व के आधार के रूप में करते हैं। इसी बोध को अधिक सशक्त बनाने के लिए हम सिद्धयोग साधना करते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि यह बोध हमारे सभी कर्तव्यों व आदान-प्रदान में प्रकट हो।

अब सत्संग का अगला तत्त्व वह था जिसकी सबसे अधिक प्रतीक्षा हो रही थी। याद है, २३ जून को गुरुमाई जी ने श्री निलय हॉल में उपस्थित सभी लोगों को जन्मदिन महोत्सव सत्संग की सारिणी तैयार करने के लिए आमन्त्रित किया था? गुरुमाई जी ने एक इच्छा व्यक्त की थी कि लोग साफ़-सुथरे चुटकुले सुनाएँ। इस प्रकार, हर कोई उनके जन्मदिन पर एक बढ़िया अभ्यास करेगा : हँसने का। यह गुरुमाई जी की ओर से जन्मदिन की एक भेंट होगी जो हर कोई एक-दूसरे को देगा।

इस भाग के आरम्भ में दो युवाओं, मल्लिका मैक्सवॅल और गिरी बाराहोना ने हँसी के विषय में उद्धरण प्रस्तुत किए। मल्लिका और गिरी दोनों ही अनेक वर्षों से बहुत ही शिस्त व लगन के साथ तरुण पोषण विभाग में सेवा करते आए हैं। तरुण पोषण वह विभाग है जो विश्वभर के बच्चों, किशोर-युवाओं और परिवारों के लिए होने वाले शिक्षण व अध्ययन कार्यक्रमों का निरीक्षण करता है।

मल्लिका और गिरी ने ये उद्धरण पढ़ने आरम्भ किए :

> "जब आप हँसते हैं तो आपको ईश्वर की झलक प्राप्त होती है।"
>
> "हँसी, आत्मा की सूर्यकिरण है।"
>
> "हम इसलिए नहीं हँसते क्योंकि हम खुश हैं — हम खुश हैं क्योंकि हम हँसते हैं।"[१]

तीसरा उद्धरण अभी पढ़ा ही जा रहा था कि अचानक हमने देखा कि एक विज़िटिंग सेवाकर्ता उर्मि भट्ट, जो सन् १९७३ से सिद्धयोग सिखावनियों का अभ्यास कर रही हैं, हाथ हिलाती हुई, बहुत मज़बूत इरादे के साथ वक्ताओं की ओर आईं और बड़े ज़ोर से बोलीं, "अरे! अरे! मुझे आपसे एक प्रश्न पूछना है।"

सभी प्रतिभागी हत्प्रभ थे! जिज्ञासावश वक्ताओं ने पूछा, "कौन-सा प्रश्न उर्मि जी?"

उर्मि जी ने पूछा, "स्वामी कृपानन्द ने मक्खन को खिड़की के बाहर क्यों फेंका?"

1 Quotations (from first to last) by Merrily Belgum, Thomas Mann, and William James.

वक्ताओं ने कहा, “हम नहीं जानते कि स्वामी कृपानन्द ने मक्खन को खिड़की के बाहर क्यों फेंका?”

[अंग्रेज़ी भाषा में मक्खन को बटर कहते हैं और उड़ने को फ्लाय कहते हैं। बटर और फ्लाय से मिलकर जो अंग्रेज़ी शब्द बनता है, “बटरफ्लाय” उसका हिन्दी में अर्थ होता है, तितली। अतः अंग्रेज़ी में उर्मि जी ने पूछा कि स्वामी जी ने बटर को फ्लाए क्यों किया?]

“क्योंकि वे बटरफ्लाय अर्थात् तितली को उड़ते हुए देखना चाहती थीं!” फिर उर्मि जी तितली के पँखों की तरह अपने हाथ ऊपर कर, फड़फड़ाते हुए तितली बनने का नाटक करते हुए श्री निलय हॉल की काँच की बड़ी खिड़की की ओर चली गईं।

इससे हँसी की एक लहर दौड़ पड़ी जो बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ गई कि अगले दस मिनिट तक लोग बस हँसते ही रहे क्योंकि अगले दस मिनटों में कई साफ़-सुथरे चुटकुले सुनाए गए। चार-पाँच लोगों का एक समूह आगे आकर चुटकुला सुनाता और फिर दौड़ता हुआ वहाँ से चला जाता और दूसरा समूह आकर उनका स्थान ले लेता। चुटकुलों का यह सिलसिला बिना रुके चल रहा था जिसमें बीच-बीच में कीबोर्ड पर मस्ती भरे तराने व नाटकीय नगाड़े बज रहे थे और ज़ाहिर-सी बात है, हँसी के फव्वारे तो फूट ही रहे थे।

लम्बे-छोटे चुटकुले और हर आयु-वर्ग के लिए उपयुक्त चुटकुले सुनाए गए। वे हमारी हँसी की ही तरह, एक के बाद एक लहर के रूप में आते गए।

“सारे समुद्र एक-दूसरे को “हैलो” कैसे कहते हैं?”
“पता नहीं, कैसे कहते हैं?”
“वे वेव करते हैं!” [अंगेज़ी शब्द वेव का अर्थ ‘हाथ हिलाना’ भी होता है और ‘लहर’ भी।]

***

“उस फैक्टरी को आप क्या कहते है जो अच्छी चीजें बनाती है?”
“क्या क्या?”
सेटिसफैक्टरी!”

***

“गणित की किताब इतनी दुःखी क्यों थी?”

“क्यों?”
“क्योंकि वह प्रॉब्लम्स से भरी थी!”

***

कुछ दिन पूर्व मैं घर के बगीचे में अपने ६ साल के बेटे के साथ बैठा था। हाँ, हमने अपने कार्य से थोड़ा अवकाश लिया था और निर्णय किया था कि हम बस वहाँ बैठकर बादलों को और शानदार आकाश को निहारेंगे कि तभी अचानक उसने पूछा, “पिताजी, हम यहाँ क्यों हैं?”

“कितना गहन प्रश्न है!” मैंने सोचा। “यह बच्चा जीवन का अर्थ जानना चाहता है!”

“बेटा दरअसल, अंतरिक्ष से ब्रह्माण्ड बना और समय का निर्माण हुआ जो फिर जीवन बना, और जीवन बनने के बाद लोगों का जन्म हुआ और तुम भी ऐसे ही पैदा हुए। तुम समझ रहे हो?”

“जी नहीं।”

“अच्छा मैं फिर से बताने की कोशिश करता हूँ. . .”

“नहीं, पिताजी। हम यहाँ क्यों हैं? क्या हमें माँ को लेने के लिए एक घण्टे पहले हवाईअड्डे नहीं जाना था?”

***

“तुम गोल्ड [स्वर्ण] सूप कैसे बनाओगे?”
“पता नहीं।”
“उसमें २४ कैरॅट [गाजर] डाल कर।”

***

“क्या तुमने हर्लिविल में खुले नए रेस्तराँ के बारे में सुना है? उसका नाम है, “कर्म।” वहाँ कोई मेन्यु नहीं होता; आपको वही मिलता है जिसके लायक़ आप हैं।”

***

" मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी आण्टी, जहाँ कहीं भी हैं, वे हमें नीचे देख रही हैं।"
"ओह! कितनी प्यारी बात है।"
"अरे, उनका निधन नहीं हुआ है, दूसरों को नीचा देखना उनका स्वभाव है।"

***

"मिस कोहेन, आपका चेक रद्द होकर वापस आ गया।"
"डॉक्टर, मेरी आर्थराइटिस भी वापस आ गई है।"

***

एक व्यापारी एक दफ़्तर में गया। वहाँ उसने देखा कि एक नौसिखिया व्यक्ति दीवारों की पुताई कर रहा था। इतनी भीषण गर्मी के दिन भी उस व्यक्ति ने दो-दो कोट पहन रखे थे। उस व्यापारी ने जब यह देखा तो उसे थोड़ा विचित्र लगा। उसने उस व्यक्ति से पूछा, "तुमने इतनी गर्मी में ये कोट क्यों पहने हुए हैं?"

"अरे, मैं तो बस इस रँग के डिब्बे पर लिखे निर्देशों का पालन कर रहा हूँ। इस पर लिखा है, बेहतरीन परिणाम के लिए, दो कोट इस्तेमाल करें!"

***

दो लोग अपना परिचय देते हैं :

"मैं बादशाह अकबर हूँ।"
"और मैं बीरबल, इनका बुद्धिमान व विश्वसनीय मन्त्री।"
"अच्छा, बीरबल, मुझे तुमसे एक प्रश्न पूछना है। तुम जानते ही हो कि कई सालों से हम अपने सबसे बड़े शत्रु की खोज कर रहे हैं, और अभी तक हम उसे खोज नहीं पाए हैं। ऐसा क्यों?"

"ये बहुत सरल है जहाँपनाह; क्योंकि हम मुग़ल हैं, गूगल [Google] नहीं।"

***

गोल्फ़ खिलाड़ियों की एक मित्र-मण्डली थी जिसमें सभी ४०-४५ की उम्र के थे। एक बार चर्चा चल रही थी कि उन्हें दोपहर के भोजन के लिए कहाँ मिलना चाहिए। अन्ततः, सभी सहमत हो गए कि वे स्मिथीज़ डाइनर नाम के रेस्तराँ में मिलेंगे क्योंकि वह गोल्फ़ कोर्स के नज़दीक था और वहाँ के वेटर बड़ी तेज़ी से और बहुत अच्छी तरीक़े से काम करते थे।

दस साल बाद, जब वे लोग ५०-५५ साल की उम्र में पहुँचे तो गोल्फ़ मित्र-मण्डली ने फिर से चर्चा की कि दोपहर के भोजन के लिए कहाँ मिलना चाहिए। अन्ततः, सभी सहमत हो गए कि वे स्मिथीज़ डाइनर नाम के रेस्तराँ में मिलेंगे क्योंकि वहाँ का भोजन अच्छा था और सेवाएँ भी अच्छी थीं। साथ ही खेल-सम्बन्धी कार्यक्रम देखने के लिए वहाँ टेलीविज़न भी थे।

दस साल बाद, जब वे सब ६०-६५ साल के हुए तो गोल्फ़ मित्र-मण्डली फिर से इकट्ठी हुई और चर्चा की कि दोपहर के भोजन के लिए उन्हें कहाँ मिलना चाहिए। उन सभी ने एक बार फिर से सर्वसम्मति के साथ यह निर्णय लिया कि वे स्मिथीज़ डाइनर नाम के रेस्तराँ में मिलेंगे। क्यों? क्योंकि वहाँ गाड़ी पार्क करने के लिए पैसे नहीं देने पड़ते और वहाँ का भोजन भी बहुत बढ़िया होता है।

दस साल बाद, जब वे सब ७०-७५ साल के हुए तो उन्होंने फिर से चर्चा की कि उन्हें दोपहर के भोजन के लिए कहाँ मिलना चाहिए। अन्ततः, सभी ने यह निर्णय लिया कि वे स्मिथीज़ डाइनर नाम के रेस्तराँ में मिलेंगे क्योंकि उस रेस्तराँ में व्हीलचेअॅर की सुविधा थी, और वे लोग शान्ति से अपना भोजन कर सकते थे।

दस साल बाद, जब वे सब ८०-८५ साल के हुए तो मित्रों ने चर्चा की कि दोपहर के भोजन के लिए उन्हें कहाँ मिलना चाहिए। अन्ततः, सभी ने यह तय किया कि वे स्मिथीज़ डाइनर नाम के रेस्तराँ में मिलेंगे क्योंकि वे इससे पहले कभी वहाँ गए ही नहीं थे।

***

“एक आदमी एक किसान से पूछता है,

‘महोदय, क्या आप मुझे अपने खेतों के बीच से जाने की अनुमति देंगे, ताकि मुझे पूरा घूमकर न जाना पड़े? मुझे ४:२० की ट्रेन पकड़नी है।’

“किसान ने कहा, ‘हाँ चले जाओ, और अगर मेरे बैल ने तुम्हें देख लिया तो हो सकता है कि तुम ४:०५ तक ही पहुँच जाओ!”

***

“एक बार एक आदमी अपने घर में बैठा था कि अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोला तो देखा कि ज़मीन पर एक घोंघा था। आदमी ने घोंघे को उठाया और उसे जितनी दूर तक फेंक सकता था, फेंक दिया। एक साल बाद, आदमी अपने घर में बैठा था। फिर से किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोला तो देखा कि फिर से वही घोंघा था।”

“वही घोंघा?”

“वही घोंघा था। आदमी ने घोंघे को उठाया तो घोंघे ने कहा, ‘मुझे फेंका क्यों?”

***

“क्या आपने हर्लेविले में एक नए रेस्तराँ के बारे में सुना है? जिसे कर्म कहा जाता है। जहाँ कोई मेन्यु नहीं है ; आपको ठीक वही मिलता है जिसके आप लायक हैं।”

***

चुटकुला सुनाने वाले एक सज्जन ने कहा :

> हममें से अधिकतर लोग कभी भी एक पेशेवर के रूप में मंच पर खड़े नहीं हुए थे — और हममें से कई लोगों के लिए इस तरह खड़े होकर चुटकुले सुनाने का मतलब था अपने आरामदायक दायरे से बाहर आना। फिर भी, मुझे नहीं लगता कि हममें से कोई भी इस अवसर पर हाँ, हाँ! कहने में झिझका था। हम अपने आनन्द, अपनी हँसी को अभिव्यक्त करना चाहते थे और दूसरों को हँसाना चाहते थे, और, सबसे ज़्यादा, हम अपनी परम प्रिय गुरुमाई जी का जन्मदिन उसी तरीक़े से मनाना चाहते थे जिस तरह से उन्होंने हमसे मनाने के लिए कहा था। हम अपनी भेंट अर्पण करने के लिए तैयार भी थे और लालायित भी।

एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने बताया :

> जब मैंने गुरुमाई जी को हँसते हुए व हॉल में सभी लोगों को हँसते हुए देखा—तथा जब मैंने स्वयं अपने आप को भी हँसते हुए देखा—तो मैंने पाया कि मेरी सम्पूर्ण सत्ता मुस्करा रही थी।

> मेरी सम्पूर्ण सत्ता सचमुच खुश थी। यह एक रूपान्तरणकारी अनुभव था — हँसने के माध्यम से मैं उस आनन्द से जुड़ पाई जो सदैव मेरे हृदय में है। मुझे लगा कि मैं मुक्त हो गई हूँ। तभी से मैं हँसी का स्वागत करने का और खुद अधिक हँसने का प्रयत्न कर रही हूँ।

और स्टाफ़ के एक सदस्य का ऐसा कहना था :

> गुरुमाई जी के जन्मदिन के समय से मैं हँसी पर चिन्तन कर रहा हूँ और मुझे यह समझ में आया है कि हँसी के नीचे महान आनन्द निहित है। यह आनन्द स्थिर भी है व उत्साहपूर्ण भी, जैसे कि रात के समय, चमचमाते समुद्री तारों की दीप्ति, समुद्र-तट पर देखी जा सकती है। यदि मैं समय निकालकर गुरुमाई जी के सन्देश-प्रवचन का स्मरण करूँ — परम सत्य के साथ "रुकने और जुड़ने का" — तो किसी भी क्षणविशेष में मैं अपनी खुशी का स्थान पा सकता हूँ; दरअसल यह प्रयत्नरहित है।

जन्मदिन महोत्सव के इस पड़ाव तक पहुँचकर हम पूर्ण महसूस कर रहे थे।

हम महसूस कर रहे थे कि जो कुछ प्राप्त करने के लिए था हमने वह सब प्राप्त कर लिया है।

हम महसूस कर रहे थे कि हम एक परिवार हैं।

गुरुमाई जी ने जन्मदिन के लिए हमसे जो निवेदन किया था हम उसे पूरा करने की उपलब्धि को महसूस कर रहे थे।

हम महसूस कर रहे थे कि हम आनन्द के सागर में डूब गए हैं।

समय ठहर गया था।

तथापि, शीघ्र ही, हमने श्री निलय में आच्छादित सूक्ष्म मौन में से उभरती हुई मन्त्रों की ध्वनि को सुना . . .

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .